

**दुआ - 2**

तम्हीद व सताइश के बाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम पर दुरूदो सलाम के सिलसिले में आपकी दुआ।

**बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम**

तमाम तारीफ़ उस अल्लाह तआला के लिये हैं जिसने अपने पैगम्बर (स0) मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम की बअसत से हम पर वह एहसान फ़रमाया जो न गुज़िश्ता उम्मतों पर किया और न पहले लोगों पर अपनी इस कुदरत की कार फ़रमाई है जो किसी शै से आजिज़ व दरमान्दा नहीं होती अगरचे वह कितनी ही बड़ी हो। और कोई चीज़ उसके कब्ज़े से निकलने नहीं पाती अगरचे वह कितनी ही लतीफ़ व नाजुक हो, उसने अपने मखलूक़ात में हमें अखिरी उम्मत करार दिया, और इन्कार करने वालों पर गवाह बनाया, और अपने लुत्फ़ व करम से कम तादाद वालों के मुकाबले में हमें कसरत दी। ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल फ़रमा मोहम्मद (स0) और उनकी आल (अ0) पर जो तेरी वही के अमानतदार तमाम मखलूक़ात में तेरे बरगुज़ीदा, तेरे बन्दों में पसन्दीदा रहमत के पेशवा, खैर व सआदत के पेशरौ और बरकत का सरचश्मा थे जिस तरह उन्होंने तेरी शरीयत की खातिर अपने को मज़बूती से जमाया और तेरी राह में अपने जिस्म को हर तरह के आज़ार का निशाना बनाया और तेरी तरफ़ दावत देने के सिलसिले में अपने अज़ीज़ों से दुश्मनी का मुजाहिरा किया, और तेरी रज़ामन्दी के लिये अपने क्रौम कबीले से जंग की और तेरे दीन को ज़िन्दा करने के लिये सब रिश्ते नाते क़ता कर लिये, नज़दीक के रिश्तेदारों को इन्कार की वजह से दूर कर दिया और दूर वालों को इकरार की वजह से करीब किया, और तेरी वजह से दूर वालों से दोस्ती और नज़दीक वालों से दुश्मनी रखी और तेरा पैग़ाम पहुंचाने के लिये तकलीफ़ें उठाईं और दीन की तरफ़ दावत देने के सिलसिले में ज़हमतें बरदाश्त कीं और अपने नफ़स को उन लोगों के पन्द व नसीहत करने में मसरूफ़ रखा जिन्होंने तेरी दावत को कुबूल किया, और अपने महल सुकूनत व मक़ामे रिहाइश और जाए विलादत व वतन मालूफ़ से परदेस की सरज़मीन और दूर दराज़ मक़ाम की तरफ़ महज़ इस मक़सद से हिजरत की के तेरे दीन को मज़बूत करें और तुझसे कुफ़्र इख़ितेयार करने वालों पर ग़लबा पाएं, यहाँ तक के तेरे दुश्मनों के बारे में जो उन्होंने चाहा था वह मुक़म्मल हो गया और तेरे दोस्तों (को जंग व जेहाद पर आमामाद करने) की तदबीरें कामिल हो गईं तो वह तेरी नुसरत से फतेह व कामरानी चाहते हुए और अपनी कमज़ोरी के बावजूद तेरी मदद की पुश्तपनाही पर दुश्मनों के मुकाबले के लिये उठ खड़े हुए और उनके घरों के हुदूद में उनसे लड़े और उनकी कयामगाहों के वुसत में उन पर टूट पड़े। यहाँ तक के तेरा दीन ग़ालिब और तेरा कलमा बलन्द होकर रहा। अगरचे मुशरिक उसे नापसन्द करते रहे। ऐ अल्लाह! उन्होंने तेरी खातिर जो कोशिशें कीं हैं उनके एवज़ उन्हें

जन्नत में ऐसा बलन्द दरजा अता कर के कोई मरतबे में उनके बराबर न हो सके और न मन्जिलत में उनका हमपाया करार पा सके, और न कोई मुकर्रब बारगाह फ़रिश्ते और न कोई फर्सतादा पैगम्बर तेरे नज़दीक उनका हमसर हो सके और उनके अहलेबैत (अ0) अतहार और मोमेनीन की जमाअत के बारे में जिस काबिले कुबूल शिफ़ाअत का तूने उनसे वादा फ़रमाया है उस वादे से बढ़कर उन्हें अता फ़रमा, ऐ वादे के नाफ़िज़ करने वाले कौल के पूरा करने और बुराइयों को कई गुना जायद अच्छाइयों से बदल देने वाले बेशक तू फ़ज़ले अज़ीम का मालिक है।

### खुलासा

यह दुआ का दूसरा इफ़तेताहिया है जो पहले इफ़तेताहिया के लिये एक तकमिला की हैसियत रखता है। इसलिये वादो अतफ़ के ज़रिये इसका सिलसिला पहले इफ़तेताहिया से जोड़ दिया गया है। पहला इफ़तेताहिया हम्द व सनाए इलाही पर मुश्तमिल था और यह रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम पर दुरूदो सलाम के सिलसिले में है। हम्द व सताइश और दुरूदो सलाम एक दूसरे से मुश्तब और एक कुदरती तरतीब के ज़ेरे असर एक दूसरे से वाबस्ता हैं। चुनांचे जब ख़ुदावन्दे आलम के सि एहसान व इनआम पर नज़र जाती है के इसने नौए इन्सानी की हिदायत के लिये पैगम्बरों और दीन के रहनुमाओं का सिलसिला जारी किया ताकि वही व तन्जील के ज़रिये हिदायत की तालीम होती रहे तो बेसाख़्ता ज़बान इसकी तम्हीद व सताइश के इस्तेहकाक का एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाती है। के जिसने माद्दी तरबियत के सरो सामान के साथ रूहानी तरबियत के सामान की भी तकमील की, तो जब ख़ुदा के इनआमात उसकी हम्द व सताइश के मोहरक होते हैं तो जो इरफ़ाने इलाही का ज़रिया हों और इन्सानी सलाहियतों को इस काबिल बनाएं के इनमें हिदायत के अनासिर नशो नुमा पा सकें। तहमीदे इलाही के बाद एहसान शिनासी का तकाज़ा यह होगा के इन हस्तियों से भी दुरूद व सलाम के ज़रिये इज़हारे अकीदत व अरादत किया जाए और इन ज़र्राते मुकद्देसा में सबसे अकमल व अफ़ज़ल हस्ती रसूले अकरम (स0) की थी जिन्होंने तहज़ीबे नफ़्स व तरक्की रूहानी की राहें बताईं और सिदाक़त व रूहानियत की तालीम से मुर्दा इन्सानियत को निशाते सानिया अता किया। लेहाज़ा हम्द के बाद दुरूद व सलाम को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। चुनांचे दुआ के साथ जिस तरह हम्द को मुनज़ज़म किया गया है उसी तरह दुरूदो सलवात को भी इस्तेजाबते दुआ का ज़रिया करार दिया गया है। चुनांचे अमीरूल मोमेनीन अलैहिस्सलाम का इरशाद है:-

जब अल्लाह तआला से कोई हाजत तलब करो तो पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैह व आलेही वसल्लम पर दुरूद भेजो फिर अपनी हाजत मांगो। क्योंकि ख़ुदा इससे बलन्दतर है के इससे दो हाजतें तलब की जाएं और एक पूरी कर दे और एक रोक ले।

इमाम अलैहिस्सलाम ने दुरुद व सलाम के सिलसिले में आँहजरत (स0) की शख्सियत पर इस तरह जंचे तुले अल्फाज में रोशनी डाली है के उनकी ज़िन्दगी के तमाम गोशों की मुकम्मल तस्वीर निगाहों के सामने आ जाती है। चुनान्चे इन कलेमात से आप (स0) की हस्ती के हस्बे जैल औसाफ़ व कमालात वाज़ेह होते हैं। आप (स0) वहीए इलाही के हामिल, पाकीज़ा नसब और बरगुज़ीदा ख़लाएक थे। ख़ुदावन्दे आलम ने आप (स0) को तमाम अम्बिया के आखिर में भेजा जिसके बाद सिलसिलए नबूवत खत्म कर दिया। लेहाज़ा आप (स0) आखिरी पैग़म्बर (स0) और आप (स0) की उम्मत आखिरी उम्मत है और उनके अहलेबैत (अ0) लोगों के आमाल के निगराँ और उनके गवाह हैं। आप (स0) रहमत व राफ़बत का मुजस्समा और ख़ैर व बरकत का सरचश्मा थे, उनकी दोस्ती व दुश्मनी का मेयार सिर्फ़ ईमान व अमले सालेह है और इस सिलसिले में अपने और बेगाने में कोई इम्तियाज़ व तफ़रिका रवा नहीं रखा। उन्होंने तबलीगे एहकाम और आलाए कलेमतुल्लाह के लिये जान की बाज़ी लगा दी। दीन की खातिर दुख सहे, मुसीबतें झेलीं घर बार छोड़ा और हिजरत इख़्तियार की और अपनी सलाहियते नज़्म व नस्क़ से से मुसलमानों की शीज़ाज़ा बन्दी की और उनकी फ़लाह व निजाह का सामान किया और हर तरह के ख़तरात का मुक़ाबले करते हुए दुश्मनों से सफ़आरा हुए और किसी मौक़े पर अपनी कूवत व ताक़त पर भरोसा नहीं किया बल्कि हमेशा ख़ुदा की नुसरत व ताईद के ख़वाहँ और उसकी मदद के तालिब रहे और आखिर हुस्ने नीयत व हुस्ने अमल की बदौलत अन्जामकार की कामयाबी उन्हें नसीब हुई और कुबूलियते शिफ़ाअत के दरजए रफ़िया पर फ़ाएज़ हुए।